५. शिवाजी महाराज की शिक्षा व्यवस्था

शिवाजी महाराज की शिक्षा का आरंभ : शहाजीराजे स्वयं संस्कृत के प्रकांड पंडित थे । उन्होंने अनेक भाषाओं के पंडितों और कलाकारों को अपने दरबार में आश्रय दिया था । शिवाजी महाराज के लिए उन्होंने विद्‌वान शिक्षकों की नियुक्ति की थी । सात वर्ष की आयु होने के बाद उनकी शिक्षा प्रारंभ हुई । थोड़े समय में ही वे लिखने-पढ़ने में निपुण हो गए । वे स्वयं रामायण, महाभारत, भागवत की कथाएँ पढ़ने लगे । शहाजीराजे ने शिवाजी महाराज को युद्‌धकला सिखाने के लिए कुछ शिक्षकों की नियुक्ति की । उन्होंने शिवाजी महाराज को घुड़सवारी करना, कुश्ती लड़ना, गतका-फरी घुमाना, तलवार चलाना आदि कलाएँ सिखाना आरंभ किया । इस तरह बारह वर्ष की आयु में ही शिवाजी महाराज विभिन्न कलाओं और विद्‌याओं से परिचित हो गए ।

शीघ्र ही आदिलशाह ने शहाजीराजे को कर्नाटक के नायकों के राज्यों पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा । शहाजीराजे ने कर्नाटक जाने से पूर्व जिजाबाई और शिवाजी महाराज को पुणे भेज दिया । शहाजीराजे ने उनके साथ हाथी, घोड़े, पैदल सेना, कोष, ध्वज; साथ ही विश्वसनीय प्रधान, शूर सेनानी और ख्यातिप्राप्त विद्‌वान शिक्षकों को भेजा ।

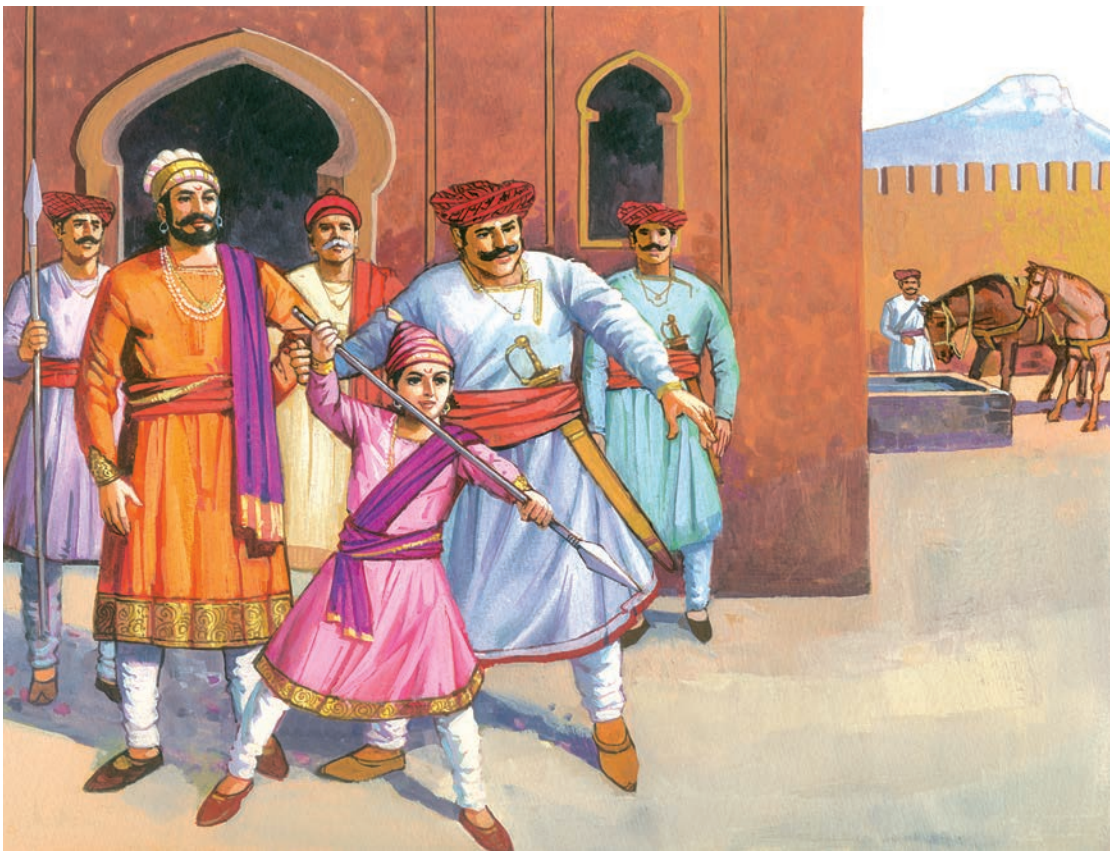

शहाजीराजे की निगरानी में बाल शिवाजी की शिक्षा

पुणे की कायापलट : जिजाबाई और शिवाजी महाराज पुणे पहुँचे । यहाँ आकर शिवाजी महाराज को अपने बचपन के दिन याद आए । बचपन में वे शिवनेरी की मिट्टी में खेले थे । सह्याद्रि के ऊँचे-ऊँचे पर्वतशिखर देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई । तत्कालीन पुणे आज की तरह महानगर न था । शहाजीराजे के शत्रुओं ने इस सुंदर गाँव को तहस-नहस कर दिया था । गाँव की संपत्ति नष्ट हो चुकी थी । मकान टूट चुके थे, मंदिर धराशायी हो चुके थे । शत्रु के डर से लोग गाँव छोड़कर भाग गए थे । खेती उजड़ गई थी । जंगल फैल गए थे । जंगलों में भेड़िये उत्पात मचा रहे थे । पुणे की ऐसी दुर्गति हो गई थी ।

जिजाबाई शिवाजी महाराज के साथ पुणे में रहने लगीं । जिजाबाई ने आस-पास के गाँववालों को बुलाकर आश्वस्त किया । लोगों को बड़ा धीरज मिला । लोग पुणे में आकर रहने लगे । वे खेतों में काम करने लगे । जिजाबाई ने ध्वस्त हुए मंदिर ठीक करवाए । मंदिरों में सुबह-शाम पूजा होने लगी । गाँव लोगों से भर गया । इस प्रकार पुणे का रूप बदल गया ।

दादाजी कोंडदेव के कार्य : जब जिजाबाई और शिवाजी महाराज कर्नाटक में थे तब पुणे की जागीर की देखभाल दादाजी कोंडदेव कर रहे थे । वे कोंढाणा के सूबेदार भी थे । दादाजी बड़े ईमानदार सेवक थे । प्रशासन चलाने में वे सत्यवादी थे । इसी भाँति वे न्यायी भी थे । उनका अनुशासन कठोर था । वे निष्ठावान थे । इस बीच शहाजीराजे के आदेश पर बड़ा भवन बनवाया गया । उसका नाम 'लाल महल' । किसान खेती की पैदावार बढ़ाएँ; इस उद्देश्य से उन्होंने उनको कुछ वर्षों तक लगान में छूट दी । इससे खेती में वृद्धि होने लगी । भेड़िये किसानों को बहुत कष्ट पहुँचाते थे । अतः उनको मारने के लिए पुरस्कार रखे गए । इससे बहुत-से भेड़िये मारे गए । चोरों की संख्या बढ़ गई थी । दादाजी ने किसानों के दल बनाए और उनका पहरा बिठाया । इससे चोरों का आतंक कम हो गया । उन्होंने भूमि की श्रेणी निश्चित करके उसके अनुसार लगान निर्धारित किया। इससे लोगों में प्रसन्नता छा गई । खेती में सुधार और लगान वसूली क्षेत्र में दादाजी कोंडदेव और निजाम शाह का वजीर मलिक अंबर द्वारा किया गया कार्य उल्लेखनीय और मौलिक माना जाता है ।

शिवाजी महाराज की शिक्षा व्यवस्था : शिवाजी महाराज पुणे की जागीर में लौटे । फिर भी जिजाबाई की निगरानी में उनकी शिक्षा व्यवस्था चल रही थी । बेंगलोर से आते समय शहाजीराजे द्वारा भेजे गए प्रतिष्ठित शिक्षकों ने शिवाजी महाराज को अनेक शास्त्र, विद्या तथा भाषाओं का प्रशिक्षण दिया ।

उत्तम राज्य और प्रशासन कैसा हो, शत्रु से युद्ध कैसे करें, किले कैसे बाँधें; हाथी और घोड़ों की परख कैसे करें, शत्रुओं के दुर्गम (बीहड़) इलाकों में से खिसककर कैसे निकलें जैसी अनेक विद्याओं से शिवाजी महाराज अवगत हुए । शिवाजी महाराज की शिक्षा में हुई प्रगति देखकर जिजाबाई प्रसन्न हुईं ।

वीरमाता जिजाबाई की शिवाजी महाराज को सीख : जिजाबाई कोई सामान्य महिला नहीं थीं । वे लखुजीराव जाधव जैसे शक्तिशाली सरदार की बेटी और शहाजीराजे जैसे पराक्रमी

पुरुष की पत्नी थीं । राजनीति और युद्धनीति की घुट्टी जिजाबाई को बचपन से ही मिली थी । जाधव और भोसले दोनों प्रसिद्ध घरानों की युद्धप्रिय परंपरा उनके रोम-रोम में बसी थी । जिजाबाई स्वाभिमानी तथा स्वतंत्रताप्रिय थीं । मराठा सरदार चाहे जितना बड़ा पराक्रम दिखाएँ फिर भी सुलतानों के दरबार में उसे कोई महत्त्व नहीं मिलता था । इस बात का उन्हें बुरा अनुभव हुआ । भरे दरबार में निजामशाह ने उनके पिता की हत्या की थी । यह दुख भी उन्होंने सहन कर लिया था । जिजाबाई ने निश्चय किया था, 'उनके पुत्र शिवबा इस प्रकार दूसरों की चाकरी नहीं करेंगे । वे स्वयं अपने लोगों का राज्य अर्थात स्वराज्य का निर्माण करेंगे ।' इस विचार से वे शिवाजी महाराज को सुसंस्कारित कर रही थीं ।

मावल में रहने वाले लोगों को मावले कहा जाता था । मावले ईमानदार, कठोर परिश्रमी और फुर्तीले थे । जीवटता में उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था लेकिन सुलतानों के शासन से वे त्रस्त थे । सुलतानों की सेना गाँवों को लूटती थी । फलस्वरूप प्रजा को दर-दर भटकना पड़ता था । उनका कोई रखवाला नहीं था । शिवाजी महाराज सोचते थे कि ऐसे दुखी और पीड़ित लोगों के लिए कुछ करना चाहिए ।

घर लौटने पर जिजाबाई के साथ वे वार्तालाप करते थे । जिजाबाई कहती थीं, ''शिवबा ! भोसलों के पूर्वज श्रीरामचंद्र थे । श्रीरामचंद्र ने दुष्ट रावण को मारा और प्रजा को सुखी बनाया । जाधवों के पूर्वज श्रीकृष्ण थे । उन्होंने दुष्ट कंस को मारा और प्रजा को सुखी बनाया । श्रीराम

वीरमाता जिजाबाई

और श्रीकृष्ण के वंश में तुम्हारा जन्म हुआ है । अरे ! तुम भी दुष्टों का नाश कर सकोगे । तुम भी गरीबों को सुखी बना सकोगे ।''

माँसाहेब के उपदेश से शिवाजी महाराज को उत्साह मिलता था । राम, कृष्ण, भीम और अर्जुन आदि वीरों की कहानियाँ उन्हें याद आती थीं । वे ही वीर पुरुष शिवाजी महाराज के ध्यान, मन तथा स्वप्न में निरंतर रहते थे । शिवाजी महाराज सदैव यही सोचते थे, 'जैसे वे वीर अन्याय के विरुद्ध लड़े; वैसे ही हम भी लड़ेंगे । जिस प्रकार उन्होंने दुष्टों का दमन किया, उसी प्रकार हम भी करेंगे ।

जिस प्रकार उन्होंने प्रजा को सुखी बनाया, वैसा ही हम भी करें । हम न्यायी, साहसी, पराक्रमी बनें ।

शिवाजी महाराज की नई शासन व्यवस्था : अब पुणे की जागीर में जिजाबाई के मार्गदर्शन में शिवाजी महाराज का नया शासन प्रारंभ हो गया । इस काम के लिए शहाजीराजे ने तैयारी करवा दी थी । शिवाजी महाराज को बेंगलोर से पुणे भेजते समय सामराज नीलकंठ पेशवे, बालकृष्ण हनमंते मुजुमदार, माणकोजी दहातोंडे सरनोबत, रघुनाथ बल्लाल सबनीस, सोनोपंत डबीर जैसे अनुभवी व्यक्ति उनके साथ कर दिए थे । मानो ये सब स्वतंत्र राजा के अधिकारी ही हों । शहाजीराजे ने इन अधिकारियों को पुणे इसलिए भेजा था कि शिवाजी महाराज अपनी जागीर का प्रशासन अच्छी तरह से चलाएँ । उनकी मदद से शिवाजी महाराज जागीर का प्रशासन चलाने लगे । लोगों के सुख-दुख की ओर ध्यान देने लगे । प्रजा पर अन्याय करने वालों को दंडित किया जाने लगा । एक तरह से शहाजीराजे की जागीर में बहुत बड़ा परिवर्तन हो रहा था । भविष्य में निर्मित स्वराज्य का नमूना मावलों को देखने को मिल रहा था । जैसे कि वह स्वराज्य का सूर्योदय ही था ।

शिवाजी महाराज का विवाह : उस समय बचपन में विवाह करने की प्रथा थी । तब जिजामाता ने कहा, "अब हमारे शिवबा का विवाह कर देना चाहिए ।" अतः उनके लिए सुयोग्य कन्या की खोज प्रारंभ हुई । उन्हें एक कन्या पसंद आईं । उनका नाम था सईबाई । वे फलटण के नाईक-निंबालकर घराने की बेटी थीं । यह विवाह बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शहाजीराजे स्वयं ..... के प्रकांड पंडित थे ।
(संस्कृत, कन्नड़, तमिल)

(आ) मावल में रहने वाले लोगों को ..... कहा जाता था ।
(किसान, सैनिक, मावले)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज को शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों की नियुक्ति किसने और कहाँ की ?

(आ) शिक्षकों ने शिवाजी महाराज को कौन-सी विद्याएँ सिखाना प्रारंभ किया ?

(इ) दादाजी कोंडदेव ने किसानों को लगान में छूट क्यों दी ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) पुणे का रूप कैसे बदल गया ?

(आ) शिवाजी महाराज किन विद्याओं में निपुण हो गए ?

(इ) जिजाबाई ने कौन-सा निश्चय किया ?

उपक्रम

(अ) जिजाबाई और शिवाजी महाराज के संवादों का नाट्यीकरण करो ।

(आ) वीरमाता जिजाबाई का चरित्र पढ़ो ।

69L1X6